15 to 21 March 2024

Title-code: UPKIN-48963 E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

16,03, 2024jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

कानपुर **वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पांच दिवसीय प्रगतिशील गन्ना किसान संगोष्ठी के समापन पर निदेशक द्वारा किसानों को सर्टिफिकेट देकर किया गया सम्मानित

एनएसआई कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी किसानों को यहां प्राप्त सारगर्भित जानकारी को अपने गांव, ब्लाक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करना चाहिये : निदेशक, प्रो.डी. स्वाईन

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में बिहार के पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण एवं गोपालगंज जिलों से आये लगभग 35 प्रगतिशील गन्ना किसानों के समूह का दिनांक-11.3.2024 से दिनांक-15.3.2024 तक चलने वाले पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज समापन हुआ। किसानों को प्रशिक्षण सत्र में जानकारी देते हुये संस्थान के सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने कम लागत में अधिकतम गन्ना उत्पादन हेतु नवीनतम उन्नतिशील तकनीक, गन्ने की फसल में संतुलित उर्वरकों का महत्व एवं प्रबंधन पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने बिहार की नवीनतम गन्ने की प्रजातियों में विभिन्न रोगों एवं कीटों का समुचित प्रबंधन, बासी गन्ने से किसान एवं चीनी मिलों के नुकसान, गन्ने की खेती में प्रयोग में आने वाले नवीनतम कृषि उपकरणों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।श्री अशोक कुमार गर्ग, सहायक आचार्य (शर्करा प्रौद्योगिकी) ने गन्ने की नई प्रजातियों से ज्यादा गुड़ प्राप्त करने की नवीनतम तकनीक के बारे में प्रगतिशील गन्ना किसानों को बताया। >पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुये संस्थान के निदेशक, प्रो.डी. स्वाईन ने कहा कि कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी किसानों को यहां प्राप्त सारगर्भित जानकारी को अपने गांव, ब्लाक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करना चाहिये, तभी कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध होगी। जब उन्नत तकनीकों का प्रसार होगा तो उपज में गुणात्मक वृद्धि होगी और मेहनत और लागत में कमी आयेगी। बचा हुआ धन और श्रम दोनों का उपयोग अन्य विकासपरक कार्यों में हो सकेगा।इस अवसर पर मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना कार्यक्रम के अंतर्गत अंतरर्राज्यीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण विजिट समूह के प्रतिनिधि श्री विनय कुमार, ईख विकास, मोतीहारी, बिहार ने निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर को संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु साधुवाद दिया और कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को नई-नई तकनीकों और जानकारियों से अवगत करवाने हेतु आभार प्रकट किया।समापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में जैव रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा, आचार्य जैव रसायन ने कहा कि जब भी इस प्रकार के शैक्षणिक या प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता महसूस हो या कोई जानकारी वांछित हो, वे (किसान) संस्थान से बिना किसी संकोच के संपर्क कर सकते हैं। आपकी समस्याओं का समाधान कर हमें खुशी होगी। ज्ञान की सरिता का प्रवाह कभी रूकना नहीं चाहिये, ये निरंतर प्रवाहमान रहे।(अखिलेश कुमार पाण्डेय,मुख्यअभिकल्पक

1 2

किसान अब अन्नदाता के साथ साथ ऊर्जादाता भी हो गए-प्रो डी स्वाईन

मुरादाबाद जनपद के 22 किसानों को दी गई गन्ना उत्पादन की नयी तकनीकी जानकारी

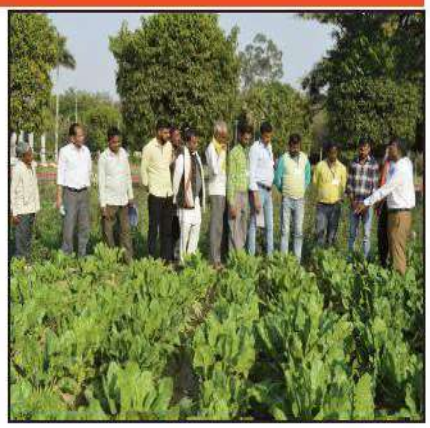

अमन यात्रा ब्यूरो

कानपुर । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के निदेशक प्रोफेसर डी स्वाईन ने आज यहाँ कहा कि अब किसान केवल अन्नदाता ही नही रह गया है वरन् ऊर्जादाता भी कहलाने का हकदार हो गया है क्योंकि गन्ने की खोही से अब विद्युत उत्पादन भी सम्भव हो गया है।प्रोफेसर स्वाईन राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में जनपद मुरादाबाद से आये 22 गन्ना किसानों को गन्ना उत्पादन की आधुनिकतम तकनीक एवम् उन्नत प्रजाति के गन्ने की जानकारी दे रहे थे।इस संबंध में मुख्य अभिकल्पक अखिलेश कुमार पांडेय ने जानकारी देते हुए बताया कि

डॉ.अशोक कुमार, सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने गन्ने की उपजाऊ प्रजातियों के साथ मिट्टी की जांच तथा उसके अनुरूप ऊर्वरकों के प्रयोग संबंधी सारगर्भित जानकारी दी। डॉ.अशोक कुमार ने किसानों को कई उन्नत तकनीकों के बारे में भी बताया जिनका उपयोग कर किसान कम मेहनत और कम समय में ज्यादा कार्य कर सकते हैं।

किसानों के दल को संबोधित करते हुये संस्थान के डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने कम लागत में एवं अपेक्षाकृत कम क्षेत्रफल एवं कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली गन्ने की विभिन्न प्रजातियों से किसानों को अवगत करवाया। डॉ. बाबर ने गन्ना उत्पादन के दौरान आने वाली विभिन्न समस्याओं, गन्ने को नुकसान पहुंचाने वाले विभिन्न कीटों के उपचार आदि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

जैव रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो.(डॉ.) सीमा परोहा ने कहा कि अंधाधुंध रासायनिक ऊर्वरकों का प्रयोग प्रकृति और खेत दोनों के लिये घातक हो सकता है। यह सिंचाई के दौरान पानी में मिलकर जमीन में जा रहा है जिससे भूजल बहुत अधिक दूषित हो रहा है और उससे तमाम बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। अब समय आ गया है कि किसानों को परंपरागत गोबर खाद और बायो कंपोस्ट की ओर ध्यान देना चाहिये। इसको अपनाने से हम मानव स्वास्थ्य और वातावरण दोनों की रक्षा कर सकते हैं।

कानपुर
कानपुर बुधवार, 20 मार्च 2024 2

22 किसानों के दल ने किया राष्ट्रीय सरकार संस्थान का भ्रमण

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर द्वारा गन्ना किसान संस्थान, मुरादाबाद के नेतृत्व में 22 किसानों का एक दल संस्थान के भ्रमण हेतु राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर पहुंचा। दल का मुख्य उद्देश्य गन्ना उत्पादन की आधुनिकतम तकनीकों एवं आधुनिक उन्नत प्रजाति के गन्ने की जानकारी करना था।

इस अवसर पर किसान दल का स्वागत करते हुये संस्थान के निदेशक, प्रो.डी. स्वाईन ने किसानों के आगमन पर हर्ष व्यक्त किया और कहा कि किसान तो अन्नदाता है। ये अन्नदाता अपने खेतों में गन्ने की फसल उगाकर चीनी मिलों को सप्लाई करते हैं। गन्ने की पेराई के उपरांत बचे अवशेष (खोई) से बिजली का उत्पादन किया जाने लगा है। इस प्रकार अन्नदाता अब ऊर्जादाता भी हो गये हैं।

डॉ.अशोक कुमार, सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने गन्ने की उपजाऊ प्रजातियों के साथ मिट्टी की जांच तथा उसके अनुरूप उर्वरकों के प्रयोग संबंधी सारगर्भित जानकारी दी। डॉ. अशोक कुमार ने किसानों को कई उन्नत तकनीकों के बारे में भी बताया जिनका उपयोग कर किसान कम मेहनत और कम समय में ज्यादा कार्य कर सकते हैं।

किसानों के दल को संबोधित करते हुये संस्थान के डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने कम लागत में एवं अपेक्षाकृत कम क्षेत्रफल एवं कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली गन्ने की विभिन्न प्रजातियों से किसानों को अवगत करवाया। डॉ. बाबर ने गन्ना उत्पादन के दौरान आने वाली विभिन्न समस्याओं, गन्ने को नुकसान पहुंचाने वाले विभिन्न कीटों के उपचार आदि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

जैव रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो.(डॉ.) सीमा परोहा ने कहा कि अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग प्रकृति और खेत दोनों के लिये घातक हो सकता है। यह सिंचाई के दौरान पानी में मिलकर जमीन में जा रहा है जिससे भूजल बहुत अधिक दूषित हो रहा है और उससे तमाम बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। अब समय आ गया है कि किसानों को परंपरागत गोबर खाद और वर्मी कंपोस्ट की ओर ध्यान देना चाहिये। इसको अपनाने से हम मानव स्वास्थ्य और वातावरण दोनों की रक्षा कर सकते हैं।

नई दिल्ली)
दिल्ली/आसपास

एनसएआई कानपुर में बिहार के किसानों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

निष्पक्ष पैस्ट। डा कृष्ण मोहन त्रिपाठी

कानपुर। उ.प्र। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में बिहार के पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण एवं गोपालगंज जिलों से आये लगभग 35 प्रगतिशील गन्ना किसानों के समूह का दिनांक-11.3.2024 से दिनांक-15.3.2024 तक चलने वाले पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज समापन हुआ।

किसानों को प्रशिक्षण सत्र में जानकारी देते हुये संस्थान के सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने कम लागत में अधिकतम गन्ना उत्पादन हेतु नवीनतम उन्नतिशील तकनीक, गन्ने की फसल में संतुलित उर्वरकों का महत्व एवं प्रबंधन पर विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने बिहार की नवीनतम गन्ने की प्रजातियों में विभिन्न रोगों एवं कीटों का समुचित प्रबंधन, बाली गन्ने से किसान एवं चीनी मिलों के नुकसान, गन्ने की खेती में प्रयोग में आने वाले नवीनतम कृषि उपकरणों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

डॉ अशोक कुमार गर्ग, सहायक आचार्य (शर्करा प्रौद्योगिकी) ने गन्ने की नई प्रजातियों से ज्यादा गुड़ प्राप्त करने की नवीनतम तकनीक के बारे में प्रगतिशील गन्ना किसानों को बताया। पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुये संस्थान के निदेशक, प्रो.डी. स्वाईन ने कहा कि कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी किसानों को यहां प्राप्त सारगर्भित जानकारी को अपने गांव, ब्लाक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करना चाहिये, तभी कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध होगी। जब उन्नत तकनीकों का प्रचार होगा तो उपज में गुणात्मक वृद्धि होगी और मेहनत और लागत में कमी आयेगी। बचा हुआ धन और श्रम दोनों का उपयोग अन्य विकासपरक कार्यों में हो सकेगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना कार्यक्रम के अंतर्गत अंतर्राज्यीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण विजिट समूह के प्रतिनिधि श्री विनय कुमार, ईख विकास मोतीहारी, बिहार ने निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर को संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु साधुवाद दिया और कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को नई-नई तकनीकों और जानकारियों से अवगत करवाने हेतु आभार प्रकट किया।

समापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में जैव रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो.(डॉ.) सीमा परोहा, आचार्य जैव रसायन ने कहा कि जब भी इस प्रकार के शैक्षणिक या प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता महसूस हो या कोई जानकारी वांछित हो, वे (किसान) संस्थान से बिना किसी संकोच के संपर्क कर सकते हैं। आपकी समस्याओं का समाधान कर हमें खुशी होगी। ज्ञान की सरिता का प्रवाह कभी रुकना नहीं चाहिये, वे निरंतर प्रवाहमान रहे। इस अवसर पर मीडिया प्रभारी अखिलेश कुमार पाण्डेय भी मौजूद रहे।

पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में बिहार के पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण एवं गोपालगंज जिलों से आये लगभग 35 प्रगतिशील गन्ना किसानों के समूह का दिनांक-11.3.2024 से दिनांक-15.3.2024 तक चलने वाले पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ किसानों को प्रशिक्षण सत्र में जानकारी देते हुये संस्थान के सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने कम लागत में अधिकतम गन्ना उत्पादन हेतु नवीनतम उन्नतिशील तकनीक, गन्ने की फसल में संतुलित उर्वरकों का महत्व एवं प्रबंधन पर विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने बिहार की नवीनतम गन्ने की प्रजातियों में विभिन्न रोगों एवं कीटों का समुचित प्रबंधन, बासी गन्ने से किसान एवं चीनी मिलों के नुकसान, गन्ने की खेती में प्रयोग में आने वाले नवीनतम कृषि उपकरणों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

अशोक कुमार गर्ग, सहायक आचार्य (शर्करा प्रौद्योगिकी) ने गन्ने की नई प्रजातियों से ज्यादा गुड़ प्राप्त करने की नवीनतम तकनीक के बारे में प्रगतिशील गन्ना किसानों को बताया। पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुये संस्थान के निदेशक, प्रो.डी. स्वाईन ने कहा कि कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी किसानों को यहां प्राप्त सारगर्भित जानकारी को अपने गांव, ब्लाक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करना चाहिये, तभी कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध होगी। जब उन्नत तकनीकों का प्रसार होगा तब उपज में गुणात्मक वृद्धि होगी और मेहनत और लागत में कमी आयेगी। बचा हुआ धन और श्रम दोनों का उपयोग अन्य विकासपरक कार्यों में हो सकेगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना कार्यक्रम के अंतर्गत अंतर्राज्यीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण विजिट समूह के प्रतिनिधि श्री विनय कुमार, ईख विकास, मोतीहारी, बिहार ने निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संसथान, कानपुर को संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु साधुवाद दिया और कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को नई-नई तकनीकी और जानकारियों से अवगत करवाने हेतु आभार प्रकट किया। समापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में जैव रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो.(डॉ.) सीमा परोहा, आचार्य जैव रसायन ने कहा कि जब भी इस प्रकार के शैक्षणिक या प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता महसूस हो या कोई जानकारी वांछित हो, वे (किसान) संस्थान से बिना किसी संकोच के संपर्क कर सकते हैं।

किसानों को दी गन्ने की नई प्रजातियों की जानकारियां

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 19 मार्च। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में गन्ना किसान संस्थान मुरादाबाद के नेतृत्व में 22 किसानों का एक दल संस्थान के भ्रमण के लिए पहुंचा। इनका मुख्य उद्देश्य गन्ना उत्पादन की आधुनिकतम तकनीकों एवं आधुनिक उन्नत प्रजाति के गन्ने की जानकारी करना था। संस्थान के निदेशक प्रो डी स्वाईन ने किसानों के आगमन पर हर्ष व्यक्त किया और कहा कि किसान तो अन्नदाता हैं। ये अन्नदाता अपने खेतों में गन्ने की फसल उगाकर चीनी मिलों को सप्लाई करते हैं। गन्ने की पेराई के उपरांत बचे अवशेष खोई से बिजली का उत्पादन किया जाने लगा है। इस प्रकार अन्नदाता अब ऊर्जादाता भी हो गये हैं। सहायक आचार्य डॉ अशोक कुमार ने गन्ने की उपजाऊ प्रजातियों के साथ मिट्टी की जांच तथा उसके अनुरूप ऊर्वरकों के प्रयोग संबंधी सारगर्भित जानकारी दी। डॉण्अशोक कुमार ने किसानों को कई उन्नत तकनीकों के बारे में भी बताया जिनका उपयोग कर किसान कम मेहनत और कम समय में ज्यादा कार्य कर सकते हैं। किसानों के दल को संबोधित करते हुये संस्थान के डॉ लोकेश बाबर (कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकार) ने कम लागत में एवं अपेक्षाकृत कम क्षेत्रफल एवं कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली गन्ने की विभिन्न प्रजातियों से किसानों को अवगत करवाया। डॉ बाबर ने गन्ना उत्पादन के दौरान आने वाली विभिन्न समस्याओं गन्ने को नुकसान पहुंचाने वाले विभिन्न कीटों के उपचार आदि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। जैव रसायन अनुभाग प्रमुख प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि अंधाधुंध रासायनिक ऊर्वरकों का प्रयोग प्रकृति और खेत दोनों के लिये घातक हो सकता है। यह सिंचाई के दौरान पानी में मिलकर जमीन में जा रहा है जिससे भूजल बहुत अधिक दूषित हो रहा है और उससे तमाम बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। अब समय आ गया है कि किसानों को परंपरागत गोबर खाद और बायो कंपोस्ट की और ध्यान देना चाहिये। इसको अपनाने से हम मानव स्वास्थ्य और वातावरण दोनों की रक्षा कर सकते हैं।

किसानों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

Digital News

- एन एस आई में किसानों ने गन्ना किसानों ने एक्सपोजर सह प्रशिक्षण में उत्पादन के सीखे गुरु।
- राष्ट्रीय शर्करा संस्था के निदेशक डॉ स्वेन जी का एक और अहम कदम।
- गन्ना किसान संस्थान मुरादाबाद के नेतृत्व में 22 किसानों का दल पहुंचा कानपुर राष्ट्रीय शर्करा स
- अन्नदाता अब ऊर्जादाता भी बन रहे है: प्रो. डी. स्वाईन